



1. रक्तोत्त :-

- (i) अभिलेख
- (ii) सिक्के
- (iii) ताम्रपत्र
- (iv) स्तम्भलेख
- (v) साहित्य

- (vi) महानन पढ़ में राजव्यान
- (vii) मौर्यकालीन राजव्यान और इतिहास
- (viii) सन्धयतारों

1. राजव्यान उे इतिहास की आनकारी :-

- (i) अभिलेख, शिलालेख एवं पूरातत
- (ii) ताम्रपत्र एवं ढानपत्र
- (iii) सिक्के
- (iv) व्यापत्य
- (v) साहित्य

1. लाग्निलेख, शिलालेख एवं प्रशासन →

- (i) बड़ली का शिलालेख → सबसे प्राचीनतम् शिलालेख
- बड़ली गांव (अजमेर)
 - अलिलोत माता के मंदिर के पाल गोपी
शंख, ओढ़ा और मिला
 - ↙ पृष्ठ ५५३ ई. पूर्व (BC)
 - बतमान में अजमेर संग्रहालय में

(ii) दोन्हुण्डी शिलालेख →

- दोन्हुण्डी गांव, नगरी चित्तौड़गढ़
- सर्विष्यम् पढ़ा - D. R. भट्टाचार्य द्वारा
 - प्राचीनतम् शिलालेख निसमे वृष्णिव एवं आगवत धर्म द्वारा उल्लेख मिलता है।
 - कई दुकड़ों में मिला है ये शिलालेख

↙ भाषा - जैसूत
लिपि - ब्राह्मी

- परिषमी इतिहासकार शजवंश को इनानी शासकों ते लाय जोड़ते हैं ज्योति पाणिनी की पुस्तक अष्टाव्यायी में यूठवर्णन मिलता है कि नगरी पर इनानीयों ने आइमन छिया तो सर्वतात् शासक (iii) बड़वा यूप लेख →

↙ गजवेश के शासक सर्वतात् द्वारा अश्वमेध, यस उरवोने द्वारा उल्लेख है। गजवेश को आँध्र लातवाहन वंश के लाय जोड़ते हैं अधिकारा इतिहासकार।

नोट:- यूप = गोल आड़ार में शिलालेख

↳ कोटा में (बड़वा गांव)

गौणवरी वंश की जानकारी

(१०७) - कृत सम्बन्ध २१५ की जानकारी

- त्रिंश यज्ञ का उल्लेख है जिसमें व्यवहनि, सोमदेव एवं बालसिध नामक तीन भाईयों ने सम्पादित किया।
- आष्टायाम यज्ञ चा भी उल्लेख है जिसे मौखिक धनपत्र ने सम्पादित किया था। यह मस ही किंचला था।

(१८) गौद्या यूप लेख →

भीलवाड़ा में

- १६४ इसनीं

✓ इसकी व्यापका - सोमदेव

- शक्ति गुनशुक्ति व्याकृति द्वारा बष्ठी राज्य यज्ञ किया।

(१९) बसंतगढ़ शिलालेख/अभिलेख →

सिरोही में - जगन्माता मांडिर में

- १२ रुपोंक

- अहुष्टि (सिरोही) के राजा राजिल एवं सत्यदेव दी जानकारी

✓ लेखक - हिम्मा

✓ सामंत प्रधा की जानकारी

(२०) मानसेरी का लेख →

मानसेरीवर सील चिन्तौड़गढ़

- इसमें अमृत मंथन की कथा एवं वार मौर्यी रामकु महेश्वर भीम शोर एवं मान सेरी जानकारी

- यह आग्निलोग कलि जेम्स टॉड ने इंग्लैण्ड जाते समय सन्मुद्र में घुंक दिया।
- इसमें भीम के पुज मान हुरा मानसरोवर झील का निर्माण करवाने की जानकारी मिलती है।
- ✓ मौर्य (राजा चित्रिंग) की भी जानकारी विसने चित्तोड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया।
- ✓ रत्नधिता - पुष्प
- ✓ उत्कीर्तिकर्ता - शिवादित्य
- ✓ अनुवाद - कलि जेम्स टॉड (एवलम्ब एवं राजस्थानी वीर Rajasthan) Book में ✓
- (*) - राजा भीम → अच्छे प्रेरे जितेने भी शाहु है उनको मैंने जाल में डाल दिया है और उनकी पहनीयों मुझे प्यार या इनका प्रिय हूँ।"
- मैं अब नहीं पूरा का राजा हूँ।
 - मेरा जन्म अभिन रे हुआ है।
 - मैं नाविकों को भी उशिअण दे सकता हूँ।
- राजा मान → राजा भीम का पुज
 - ईमानदार, सरदारों का प्रिय
 - लोक कल्याण के लिए कार्य
 - मानसरोवर झील का निर्माण (चित्तोड़गढ़)
 - इतिहासकार इन्हें ताषकुर राजवंश के भी बोड़ते हैं।

(vii) सामोली :-

- समोली गांव उद्यापुर
- गुहिल शासक शिलादित्य के समय
- भाषा जंसंहत
- लिपि. कुटिल
- शिलादित्य - राष्ट्रुओं को भीतने वाला
डुलकपी आङ्गारा डा चन्द्रमा
- शीलों पर शिलादित्य डा पृथ्वी
- व्यापारियों डा चिन्तोइ आगमन
- अरव्यवासिनी मंदिर (बावर मंदिर) डा उल्लेख

(viii) अपराजित डा शिलालेख →

गुहिल वंश डा शास्त्र अपराजित डा
वर्णन मिलता है।

- उद्यपुर के विक्टोरिया हॉल के संग्राहलय में
- शिव मिहि व उनके पुज वर सिहि दी भी
उल्लेख मिलता है।

^{imp}
(ix) शंकरधट्टा का लेख →

मानभंग नाम के शास्त्र डा उल्लेख नहा

इसकी लुलना मानमोरी से डी जाती है।

- ↖ इसका उल्लेख डन्लि जेम्स टॉड ने अपनी पुस्तक में दिया
- चिन्तोइगढ़ में गणनचुंकी प्रसाद, कपी आड़ डा निमणि
- चिन्तोइ में खूर्य मंदिर डा उल्लेख, इसका निमणि
मानभंग ने दर्शाया।

1) ਵਾਹਿਆਲਾ ਸ਼ਿਲਾਲੇਖ → ਜੋਧਪੁਰ ਮੇਂ ਜੈਨ ਮੰਦਿਰ ਜਿਸੇ ਮਾਤਾ ਝੀ ਸਾਲ
ਇਹਤੇ ਹੋਣ।
ਆਖਾ - ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ

→ **ਗਢ ਕ ਪਦਾ ਹੋਨੋ** ਸ਼ੇਲਿਯੋ ਮੇਂ (ਚਮ੍ਭੂ ਰੱਨੀ)

- ਪ੍ਰਤਿਹਾਰ ਰਾਸ਼ਕ ਕਕਕੁਕ ਜੋ ਵਾਧ ਪਿਥ ਜਨਹਿਲ
ਲੰਘਾਵਨ ਇਰਤਾ ਦੁ਷ਟੋਂ ਜੋ ਫੰਡ ਹੋਣੇ ਵਾਲਾ,
ਜੀਗੇ ਛਿਖੇ ਤਾ ਰਖਣ ਬੀਰ ਸਾਹਲੀ ਰਾਸ਼ਕ
ਬਤਾਵਾ ਗਿਆ ਹੈ।

- ਇਸमੇਂ ਮੁਗ ਜਾਤਿ ਤੇ ਬਾਲਿਆਂ ਤਾ ਅੰਦੀ ਤਲਲੇਖ
ਹੈ ਔਰ ਇਥ ਸ਼ਿਲਾਲੇਖ ਤੇ ਰਚਿਤ ਅੰਦੀ ਹੈ।

2) ਕਨੈਸ਼ਨ ਅਭਿਲੇਖ → ਕੌਟਾ ਤੇ ਨਿਕਟ ਕੁੰਜੁਆ ਛਠ ਸ਼ਿਵ ਮੰਦਿਰ ਮੇਂ ਪ੍ਰਾਪਤ
ਛੁੜਾ। ਇਸਮੇਂ ਮੌਰੀ ਰਾਸ਼ਦੀ ਤੀ ਆਨਨਦੀ।
- **ਮੌਰੀ ਰਾਸ਼ਦੀ ਧਵਲ** ਤੀ ਆਨਨਦੀ

12) ਮੰਡੋਰ ਤਾ ਸ਼ਿਲਾਲੇਖ → ਜੋਧਪੁਰ ਤੇ ਨਿਕਟ ਮੰਡੋਰ ਨਾਮਡ ਵਾਨ ਪਰ
ਬਾਕਡੀ ਪਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਛੁੜਾ।

- ਇਥ ਬਾਕਡੀ ਜੋ ਬਨਾਨੇ ਵਾਲੇ ਮਨੁਭ ਤੇ ਪੁਣ ਮਾਹਨ
ਬਾਲਣ ਤੀ ਆਨਨਦੀ

(13)

विजौलिया शिलालेख के 1170ई.मि.

विजौलिया शिलालेख जैन शावक लोलक द्वारा

गांदिर उे निमिगि डी स्मृति मे बनाया था।

- इसमे सांभर एवं अजमेर उे चौहानों द्वे वक्तुगोप्तिय श्रावण बताते हुए उनकी वंशावली एवं उपलब्धियाँ दी गई हैं।

- सांभर उे चौहानों द्वा भासाजित, धासित एवं राजनेतिक जीवन द्वा व्यापक वर्णन मिलता है।

- रचयिता - गुणध्रुव

- प्राचीन नाम भी मिलते हैं - जालौर द्वा अवानिपुरम् नाईल द्वा नड़ुल, सांभर द्वा शासुमरी, भीनमाल, द्वा श्रीमाल, विजौलिया द्वा विह्व्यावैली।

✓ कुटिला नवी द्वा भी उल्लेख

- सांभर इनी द्वा निमिगि - नालूदेव चौहान

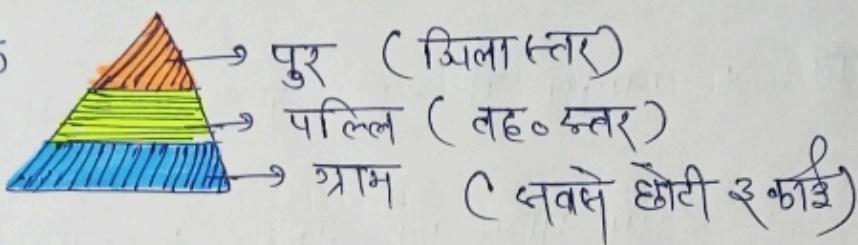
राजधानी - आहूत्साव पुर

- डोहली (डोली) - श्रीमि अनुदान, उपजाठ श्रीमि

- चौहान - नयराज, विश्वराज, चंडुराज, गोपेन्द्रराज, दुलधराज
गोविन्दराज, श्रीमि जितराज, गोपेन्द्रराज, अण्डराज
द्वा उल्लेख

- हानों का उल्लेख - पर्वतदान, ज्वर्षदान

- प्रशासनिक
प्रणाली



- 'भुक्ति' नामक सामैत्र का उल्लेख।

14. यीरि स्वम्भ प्रशस्ति → 1460ई० का

- इसमें हमीर, कुंभा आदि शासकों का विस्तार से वर्णन
- इसमें कुंभा के व्यक्तित्व गुणों पर भी पृभाव
- इसमें दानगुह, शैलगुह आदि विनिष्टके सम्बोधित भी दिया।
- उंभा दारा रचित ग्रंथ → चंडीशतक, गीत गोविन्द की दीक्षा, संगीत राज
- मालवा व शुजराट की संघुक्त सेना को दरमें का उल्लेख

रचयिता → अब्दी और महेश।

15. रायसिंह की पृश्नाएँ →

बीकानेर दुर्ग के बाहर

- बीकानेर के राजा रायसिंह के समय की हैं
- राव बीका से रायसिंह राजा के बीकानेर शासकों की उपलिख्यियों का मिलता है।
- मुगलों की सेवा करने वाले रायसिंह को मुगलों द्वारा उपलिख्यियों की जानकारी एवं जो युद्ध किए अनेक आनकारी मिलती है। युद्ध भाबुल एवं फौज द्वारा कुद्दम आये हैं।
- रचयिता - जैता (जैन मुनि) | जैता
भाषा - पंखत

16. हर्षनाथ की प्रश्नाएँ →

सीकर में हर्षनाथ मंदिर में स्थित

- ✓ मंदिर द्वा निर्माण - अल्लट
- चौहान शासक विश्वहराज के समय की है।
- चौहानों के वंश इम द्वारा उल्लेख
- विश्वहराज के पिता मिहंराज राजा हरा तोमर शासक सरकन द्वारा उसे पढ़ने वाले उल्लेख

17. नाघ संसाधन →

उदयपुर के एकलिंग भी मंदिर में

- (७१) इ. मे नरवाहन के काल की हैं।

- इसमें नागदा शहर, बापा, शुहिल एवं नरवाहन
हठ के रामायों का वर्णन

- रचयिता - ज्ञामृकवि

भाषा - द्वंद्वत्

- इसमें वैदांग मुनि द्वारा स्याद्वाद एवं अन्ते
वाद विवाद का वर्णन मिलता है।

18. शहजि शूंगी छ लेख →

रचयिता - योगेश्वर

- काले पत्थर मे उदयपुर मे एकलिंग
भी मंदिर से कुछ दूर स्थित है।

- महाराणा मोहल के व्यवहार की।

- राणा हमीर से महाराणा मोहल तक के
शालकों का वर्णन

- राणा लाखा एवं श्री दिंहुं के बाकारी पूर्याग ए
वथा भी थावा भी रथा वहां पर
टिंडुओं से लिए जाने न जाए कर भी
समाप्ति का उल्लेख।

19. रणकपुर प्रशस्ति → पाली के रणकपुर के चौमुखा मंदिर में
संस्कृत और नागरी दोनों भाषाओं में

- इसमें मैवाड़ उे राजबैशा, **धनकु सेठ** छवं डनकु
शिल्पी देपा का बर्णन
- बप्पा से कुंभा लक्खी वंशावली ।
- इसमें बप्पा को गुहिल रा पिता माना ।
- इसमें बप्पा व काल ओज को अलग व्यक्ति
बताया गया है।

रचयिता - **दिपाकु**

20. राज प्रशस्ति → राजसमंड झील, राजसमंड
- 25 काले शिलालेख
 - संस्कृत भाषा
 - विश्व की सबसे लम्बी प्रशस्ति
 - व्यापित - महाराजा राजसिंह आरा
 - रचयिता - **रणछोड भट्ट तैलंग**
 - राजसमंड झील डा निमाणि अठल राहट
चायी उे राहट 14 वर्षों में
 - भाषा **संस्कृत भाषा** राजसिंह राजसमंड

- किशनगढ़ की राजकुमारी चान्दमति से विवाह का उल्लेख।
- ✓ महाराणा नरसिंह व औरंगजेब से संधि प्र उल्लेख।

1. चीरवा का शिलालेख → उदयपुर के चीरवा गांव में
 - संस्कृत भाषा में श्लोक
 - शुद्धि रासको ई प्रारंभिक ज्ञानकारी
 - विष्णु मंदिर की व्यापना, शिव मंदिर के लिए अनुदान आदि का उल्लेख
 - शोधर, भूमि, सती पुथा का उल्लेख
 - शिल्पी - देल्हौ
लेखक - पात्रवचंद
 - प्रस्तिकार - रत्नपृथ चूर्णी



(सिक्के के सिक्के)



By. Suresh Purushottam Sir
(RAS - 884 Rank)

- राजनीतिक, धार्मिक
- धारानिक, आर्थिक
- बजात्मक
- वर्षांकग का बोहा
- प्राचीनकालीन सिक्के

1. आहुड़ के सिक्के →

- ८ तार्बे के सिक्के
- इंडो श्रीक मुद्रा. अपोलो एवं महाराजा त्रातार्य का निबंध

2. मालव सिक्के → मालवाना नया अंकित

सेनापतियों का नाम, जैसे - माय, मजुप, मपेजय

3. रामलल के सिक्के → छन्दुमानगढ़

V. imp. → कुषाण काल के भी सिक्के मिले हैं जिन्हें
मुरड़ा नाम दिया गया है।

→ V. imp. कनिष्ठ का सिक्का मिला है जिसमें गहु कोट
पहने हुए है परं आला दाग में है।

- सिर्फ़ के उँच पर देवी की मूर्ति है जिसे **नानईया** कहा जाता है

imp

4. **बैशाठ के सिक्के** →

- ४ पंचमांक चांदी की मुद्राएँ

- २४ इंडो श्रीक मुद्राएँ

PAS PRE
2016

→ ↴ १८ सिक्के **मिनेऽत्र** की हैं।

- बीजक की पहाड़ी नवपूर

5. **सांभर के सिक्के** →

- २०० सिक्के प्राप्त हुए

हविष्क की मुद्रा मिली है।

(Havishka)

6. **गुप्तकालीन सिक्के** -

नगलांचल / नगलांचल (भरतपुर)

→

१४०० सिक्के

→ इनमें से **७६** सिक्के **चन्द्रगुप्त द्वितीय** विष्मादित्य के हैं।

- कुमारगुप्त न चन्द्रगुप्त के सिक्के भी मिले

7. **गुजरात-पुतिहार कालीन सिक्के** -

मारवाड़ क्षेत्र में

(i) आदि वराह द्रम्म ✓

(ii) वराही द्रम्म ✓

(iii) विनायक द्रम्म ✓

Note:- द्रम्म / रघुक = silver के रिक्के

काष्ठिण = तांबे के सिक्के

8. मेवाड़ के सिवके :- चाँदी के सिवके - द्रग्म एवं रूपक
तांबे के सिवके - ~~काली~~ कालपणि

- ढीगला - मेवाड़ से प्रचलित तांबे के सिवके
- ✓ मिनोङ्डर का चाँदी का सिवक
दर्शनगम - शुहल के सिवके
- शुहलयति (चाँदी) का सिवका
- शील - तांबे का सिवका
- (सिवका एलची) - गिन्तीडगढ़ में मुगलों द्वारा चलाए गए सिवके
- नींदोडी - स्वरूप दिहं के समय का सिवका
- ✓ लावे के सिवके - ढीगला, भीलडी, शिशुलिया, भिड़ारिया, नाथदारिया
- पदमशाही - सल्कम्बर का सिवका
- भिंडार का सिवका - भिंडारिया
- राहपुरा के सिवके - उथारसदा, साहिया

9. प्रतापगढ़ के सिवके →

सलीमशाही, मुबारकशाही, मुबारक लन्नार

10. बांसवाड़ा के सिवके →

जब बांस शब्द का उल्लेख

सलीमशाही, बांसवाड़ा
Scanned By Scanner Gauri

11. जोधपुर के सिंहोंके →

→ गधिया सिंहोंके - गधों के खुर ई आहुति वाले

→ दल्लुशाही सिंहोंके - तांबे का सिंहका

→ रोजत टकसाल - लल्लु लिया सिंहोंके

→ तुर्फ एवं खंडा - सिंहों पर इन्हीं एवं तलवार उे
भिन्न उे सिंहों .

Note:- # मैगड में दीगला-तांबे का

12. बीकानेर के सिंहोंके →

- गजशाही

- गँगशाही

- मारछल चिन्ह मिलता है

13. जयपुर के सिंहोंके →

- हाली सिंहों

- माधोसिंह उे समय

- प्रेयसी रसडपुर डा सिंहा . अगतसिंह

- क्षाइशाही सिंहों - तांबे का

14. मेडता → चाँदशाही, अश्यासिया

15. जैसलमेर → अखेशाही, झोड़िया

16. धौलपुर → तमंचाशाही

17. अलवर → रावशाही

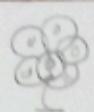
18. छिकनगढ़ → शाहजालमी

19. करौली → मानकशाही

20. टोंड → चैवरशाही

21. झूँढी → रामशाही, काटशाही, सैहरेशाही

22. कोटा → गुमानशाही, महनशाही



राजस्थान की सभ्यता एवं संस्कृति



By Suresh Purohit Sir
Rank - 884

पुष्टाणकाल →

24000 - 10,000 BC

- विराटनगर (जयपुर)
- भास्त्रगढ़ (अलवर)
- ✓ दिग्गारिया (जयपुर)
- ढर (भरतपुर)
- लूणीनदी - जालोर (खोज - B. आलचीन)
- ↖ बामनी नदी (चिन्तौरगढ़)
- ↖ बुड़ा पुष्कर (अजमेर)

~~R.B.S.E.~~ → 1970 में C.A. ईकेट ने जयपुर एवं इंदूगढ़ से

पाषाणकालीन हस्तकृष्टार (Hand Exe) खोजी

~~R.B.S.E.~~ → सेनकाटकर महोदय ने भालवाड से उपकरण खोजे।

मध्यपाषाणकाल → 10,000 - 5000 BC

पुरापाषाणकाल

ताम्र पाषाण काल

काँस्य | कोसा

महाभास्त्रपथ (लौहदग्धीग)

मौर्य

गौद्यान्तर

कुषाण शुंग चोहान

✓ बागोर (भीलवाड़ा) - पशुपालन के साक्ष्य

आदमगाठ महायप्पेश

(i) बागोर - भीलवाड़ा →

मध्यपाषाण कालीन बनाम संस्कृति
कोठारी नदी के किनारे भी कहते हैं।

'महाभतियों डाटीला'

✓ पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य

आठ सद्याता दुसमान अवशेष

'आदिग संस्कृति का नंगदालय'

च्योड़ि पत्थरों के आच्छव बाज़

मिले थे।

✓ खोज → राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं इक्षुन

College पुणे के ① नौ. V.N. मिश्र

② L.S. लेशिन

1967-69

✓ सुई भी मिली है।

- यहां से बहुतीन संस्कृति के साक्ष्य भी मिले हैं।

बौद्धिकी → Rock Painting

- (i) छाजा-नदी बुंदी
- (ii) आलनिया डोटा
- (iii) सौहनपुरा सीकर
- (iv) हरसौरा अलवर

नव पाषाण काल :— 5000 BC

- मानव द्वारा छड़ि का प्रारम्भ
- ✓ बांगौर भीलवाड़ा
- ✓ तिलवाड़ा बाड़मेर
- ✓ भैंसरोड़गढ़ एवं नवाघाट (चित्तौड़गढ़)
- ✓ हम्मीरगढ़, नहजपुर, देवली, गिल्कुड (जनाबन्दी)
- ✓ भरनी (टोड़क)

ताम्र पाषाण कालीन → श्रावीण संस्कृति

आहड़ →

Udaipur जिले में आयडनदी के किनारे

अन्य नाम. आधारपुर, नाम्रवती नगर, घूलकोठ

उत्खनन - आश्र कीति व्यास (छोटे स्तर पर) 1953

- V.N. मिश्रा एवं H.D. लोकलिया द्वारा (बड़े स्तर पर)
- विजय कुमार एवं डा. P.C. चौधरी (Raj. Govt.) (1956-61)

विशेषताएँ:-

- गकान आयाताकार एवं कच्चे अशुनानी मुद्रों भी मिली हैं।
- चूल्हे एवं साध ६
- सामूहिक भोजन

- गोरे बनकोठ → अनाज रखने के बड़े सूदभाष्ट

- मानव हथेली की छाप

- लाम्बे ऊ भट्टी
- बल ऊ मृणमूर्ति

- लाल व काले रंग के सूदभाष्ट

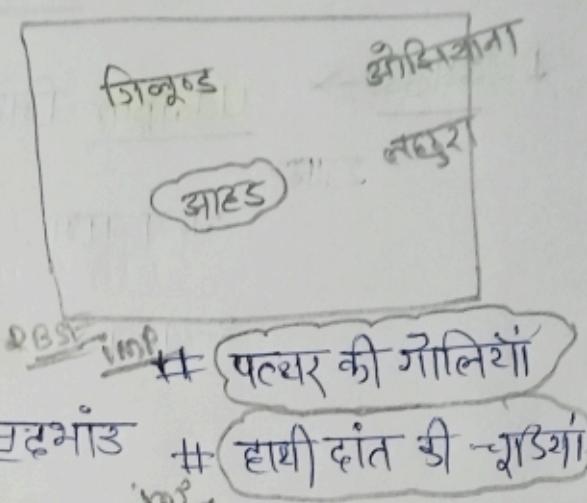
imp ↗ दो मुहं वाला चूल्हा एवं फैन

- ४ बार बस्तीयों के बसने व उन्हें डे रास्ता

imp ↗ चूल्हाप मिट्टी के घड़ों को छुड़ाने के अपव एवं रखने पानी सोखने का गोड़ा

↖ पक्की इट डा प्रयोग नहीं एवं कुच्छी
उटी डा प्रयोग इया दृ

- ② जिलू०ड → राजसमंद
बनास नदी के तट पर
B.B. लाल
ताम्रपाषाणिक काल
✓ आहड़ का क्रेन्ह
बाल एवं काले रंग का मृद्गमांड
पक्की ईरों का प्रयोग
- पांच घुकार तुँ मिट्टी बर्न → साढ़ा, काला, पांचिशदार,
शुरै और लाल काले
- ③ ओङ्कियाना → बदनोर अभिलवाड़ा
R.P. Meena & Mok Tripathi
आहड़ लंखति का भाग
✓ गाय डी छोटी मूर्ति (बैल)
स्फेद चित्र का बैल - ओङ्कियाना बुल
- मिट्टी के बर्न
- ④ लघुरा → आसींद अभिलवाड़ा.
B.R. Meena
चार काले के अवशेष
ताम्बे के बर्न
चुंगकालीन तीखे किनारे वाले खाले



5.

नालायल → बल्लभनगर उद्यापूर
८.८. मिश्र, १९७३ में

→ विशाल मवन - ११ करोड़

→ ताम्बे के बैंग आमूषण

→ वृत्ताकार गढ़ी

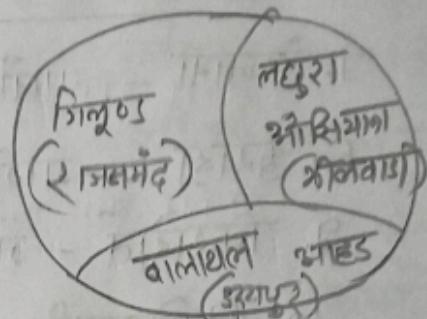
- बैंब एवं कुत्ते की छोटी मूर्ति

→ ५ लोहा जलों की अट्टी

- दस्त का हुकड़ा (~~हुकड़ा~~)

- प्राचीनतम ताम्बे का सिंकंका, जिन पर हाथी और चन्द्रमा के चिह्न

- मिट्टी के बर्तन जो घमकधार व खुशहरे मिले



ताम्बुपाधाण कालीन

6. गोश्वर → सीकर कर्तिली नदी के किनारे

हड्ड्याव मोहनजोड़ी
को तांवा बेजा
आता था।
थुड्ह तांवा ११%.

बोज - १९७२ R.C. अग्रवाल (२८ चन्द्र)

१९७७ - R.C. अग्रवाल एवं विजय कुमार . ३ ल्खन

- सबसे ज्यादा ताम्बे के उपकरण
एसालिस लाम्बुजीन लम्बताओं की जननी।

- भारत की प्राचीनतम ताम्बुजीन लम्बता

✓ - छवि हड्ड्याकालीन का रास्ता

✓ - कपीषवर्षि मृदमांड (भूरे)

- मकान पत्थर के इंट का उपयोग नहीं

- प्राचीनतम नौदि के अवशेष

- मद्धली पकड़ने के काटे

अन्य स्थान ताम्रपाषाण कालीन →

7. ऐलाना - जालौर
8. कुराड़ा - नागौर
9. किराडोत - जयपुर (58 औडियो मिली हैं)
10. चितवाड़ी - जयपुर
11. जौरपुरा - जयपुर
12. चल्लमुरा नेंदलालपुरा - जयपुर
13. मलाह - अरतपुर - ताम्बे डी तलबार ✓
14. ऊल मलाही - नवाड़ी माहोपुर
15. पिंड पांडलिया - चिन्नोड़गढ़
16. साबनिया - बीकानेर
17. पूणल - बीकानेर
18. शाड़ील - उदयपुर

कालीयुगीन सभ्यता → काले व लाल रंग के मृदभाष्ट

- (i) वरोर. गंगानगर (काली मिट्टी के सामूह्य)
- (ii) कालीबंगा. इन्द्राजाल
- (iii) रंगमहल. इन्द्राजाल
- (iv) बड़ोपाल - इन्द्राजाल
- (v) डाबरी - इन्द्राजाल

(तोवा + टिन) = काँसा # सर्वप्रथम उपयोग ग्रे
ली गई धातु - ताम

काँसा
(तोवा + टिन)

1. कालीबंगा → कालीबंगा - पंजाबी भाषा का शब्द - काली रंग की चूड़ियां
(चंद्र नदी) # शृण्म नगरीय सभ्यता (Urban Civilization)

- 1961 में हो - जान. L.P. टेल्सीटोरी
हीलो की खुलाई - 1952. अमलानंद धोष - रिन्द्रुधारी सभ्यता के रूप में पहचाना
- 1961-69 तक डॉ व्यशनन. B.B. लाल एवं बी. के. थापर
- 2500-1500 BC समय

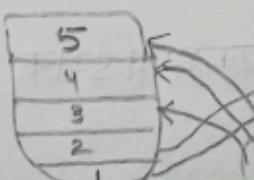
विशेषताएँ → - दो टीले # लाल रंग का मृदभाष्ट

- दोनों टीलों पर वर्कोटा # दरारथ शासन (उपरी राजधानी)

- 5 स्तर मिले # अक्षयके साथ

पहलाईमान 2 स्तर - प्राकृ हड्डियां कालीन - कच्ची इंट

तीसरा, चौथा, - 3 स्तर - हड्डियां कालीन - पक्की इंट



- जुते हुए खेत के अक्षेष्ण # भवनों का फर्श अल्कूत

- सड़क ए इसरे को सम्झेण पर आटली ही

- औल्हे नंदर के समान # वैलगाकार - मुहर ✓

- लीन पुकार की समाधियां # खिलोना बैलगाड़ी

- धार्मिक उपासन का स्तं नहीं बल्कि

✓ भूकम्प के साथ प्राचीनतम

- दशरथ राजा ने सिंधु घाटी सभ्यता की हीसरी राजधानी कहा।

- भवनों का फर्श आलंकृत एवं सजावटीय है।

- 7 अग्निकेदिकारों

✓ स्वतंत्र भारत का पुण्यम पुश्तात्मिक स्थल

- इस सभ्यता को 'दीन-हीन सभ्यता' कहा जाता है।

- कालीकंगा संग्रहालय - 1985-86

- स्वास्तिक चिन्ह का प्रमाण

- मुङ्गा मिली जिसमें एक और व्याग्र का चिह्न और एक ओर महिला का चिह्न जिसे कुमारदेवी कहा

- बालक की खोपड़ी मिली है जिसमें छः छोटे मिले हैं हमें शल्य चिकित्सा का जान प्राप्त होता है।

- पानी के निकास के लिए लकड़ी के इंटों की नालियाँ छनी हुई मिली हैं।

② रामायण → हनुमानगढ़

(डा. हन्नारिद) के नेतृत्व में स्वीडिश एक्सपीडिशन (1952-54)

विशेषताएँ ✓ दीनबार बसने तथा 3 बार उन्हें के साथ

✓ सिंधु सभ्यता, बृहाणकाल एवं पूर्व, तुष्ण कालीन संस्कृति के अक्षेत्र

- कनिष्ठ कालीन मुङ्गा एवं

- नावल की खेती

- बड़ोपल व लकड़ी (हनुमानगढ़) में समान सभ्य

लौहधुगीन सम्यताओं के भोग

1. नोह भरतपुर
2. जोधपुर जयपुर
3. नगरी चिंतोडगढ़
4. खुनारी खुस्तुड़
5. देढ़ ठोक
6. बैराठ जयपुर
7. इसवाल उदयपुर

(खलेटी रंग के विविध
मुद्राओं)

RSE

पूर्व हड्ड्या एवं हड्ड्या
कालीन ल्यल

- (i) कनकपुरा
- (ii) बिजनोर
- (iii) तरखानावाला डेरा
(गंगा-नदार)
- (iv) अबृपगढ़
- (v) चक-८४

1. नोह (भरतपुर) → ५ स्तर

- पांच संस्कृतियों के अवशेष

- रतनचन्द्र अग्रवाल एवं डा. डेविड्सन के नेतृत्व में
उत्खनन (1963-64)

- रूपोरेल नदी के तट पर

- कपीशा वर्ण मुद्राओं (ज्वारंग)

- महाभारत कालीन अवशेष

- यश्च घृतिमा

- जय बाबा दी मूर्ति

2. जोधपुर (जयपुर) → - साबी नदी के तट पर

गोकरण रंग के मुद्राओं

- ताम्रा उपकरण

- लौह गलोने दी भट्टी

- श्रीयकालीन अवशेष

- शुंग एवं कुषाण

- हथीदात के अवशेष

भौदें का उपयोग
रथ के लिए में

③ नगरी चित्तोङ्गट →

- प्राचीन नाम-महायामिका (पाणिमि दी अष्टाधारी में)
- शिवि जनपद के सिक्के
- Dr. D. R. भण्डारकर द्वारा १९०४ में
- बैड़च नदी के तट
- गुप्तकालीन कला के अवशेष

Note: नगरी में एक मंदिर वह हौ शिलालेख मिले

(१) हौमुड़ी शिलालेख

(२) हाथीबाड़ी का शिलालेख

१८४७ में कवि श्यामलदास

थारा योजा गया

एवं भण्डारकर द्वारा पढ़ा गया।

④ सुनारी (झुन्झुन्नु) → काँतली नदी के तट पर

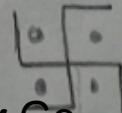
- लौहा गलाने की प्राचीनतम भृतियाँ
- लौहे का एक प्याला मिला

⑤ रेठ (टौंक) →

दील नदी के किनारे

- एशिया का सबसे बड़ा सिक्कों का अङ्गार
- मालव जनपद की मुद्राएँ
- प्राचीन भारत का टाटानगर
- K.N. द्वारा १९८५ में

- स्वास्थ्यिक का अलंकरण



⑥ बैराठ जयपुरः— शाहपुरा जयपुर

(ii)

एक गोल मंहिर
मिला है।

बागगांगा नदी के तट पर

- मत्स्य जनपट की राजधानी
- पाषाणकाल के भी साक्ष
- बौद्ध धर्म का केन्द्र
- बीजु इंगरी, भीम इंगरी, महादेव इंगरी
- अपडे में बैठी पंचमार्क मुड़ोएँ
- बौद्ध स्तूप एवं मठ → 6 करमरों का छार | आवाय मिला
- ढीनथान संप्रदाय

✓- मंहिर कुल ने बैराठ का घोस किया

- महाभारत कालीन अवशेष

→ चीनी यात्री (युवानच्चांग) ने भी उल्लेख किया बैराठ

- 1936 में व्याराम सहनी

उत्कृष्टन. 1961-62 - 10 कैलास की स्थिति

(ii) नील रत्न बनर्जी

ऊर्द्ध्व बर्ट ने 1837 में अग्र शिलालेख ~~कर~~ → बीजु इंगरी पर

- बृहद्यसंघ, धाम

- अशोक की मगध का राजा

- गौह्या पर प्रतिबंध का प्रमाण

स्वामी रामसिंह (1835-1880) को 'स्वर्ण मंजूषा' मिली

- बाँख लिपि के असर प्राप्त हुए हैं।

⑦ इस्वाल उदयपुर → कुषाण कालीन स्थिति

- लोहा गलों का उपयोग

- प्राचीन रूप दोत के अवशेष

अन्य सम्प्रतोरे →

- ① नगर - टोंक मालव जनपद की राजधानी
प्राचीन नाम, कर्कोटा
- ② नलियासर - नथपुर (सांभर) -
 - चौहान युग के पूर्व की सम्प्रता
 - शौहोय, इंडोसेनियन-सिंधके
- ③ जूना (खड़ा) - पाली
 - पहला चौहान कालीन नगर
 - मिहुरी के बनने पर शालभैजिङ्गा का अंकन
- ④ मीनमाल जालौर -
 - इतनन्द्र अग्रवाल प्राचीन नाम - मीमाल
 - ब्राह्मण शत्रप के सिंहके
 - चूनानी बुराही
 - रोमन राष्ट्रोरा (सुरापात्र)
- ⑤ चन्द्रावरी (सिरोही) → - मांडौट आव की तलहटी में आव्र रोड के निकट
 - सेवानी नदी के दांधे तह पर
 ✓ - 1822 में कालि जैसटाँड द्वारा खोजा
 - 1980 में सियाजीराव गायकवाड विश्वविद्यालय
 बड़ौदा के पुरातत्व विभाग द्वारा गहन संवेदन
 - उत्थनन - डॉ. जीवन खरकवाल द्वारा
 - 26 बीघा में ऊँझा है। ~~सीलकार्यालय~~ इसके
 मध्य भाग में 33 मंदिरों का रामरुद

है जो इन्हे तथा जैन धर्म से सम्बन्धित है।

इसे द्वारा चबूत्रे पर ये लभी मांडि को हुए हैं।
(जग्मी)

- ४वीं से १५वीं शताब्दी का अमय।

✓ तीन विशाल भवन

✓ एक कमरे में अनाजों के जले हुए बीज तथा

अनाज बीजों की छट्टी का भाग खोना गया।

- दो किलो मिले हैं।

- किलो के प्रक्षेत्र थार पर लंबत १३२५ का एक अभिलेख
भी मिला है।

- यह परमार शासकों की राजधानी थी जिसमें
यशोधर्वल तथा द्वारा वष जैसे प्रतापी शासक
हुए हैं।

↗ धारानकालीन उपकरण छबि शैलचित्र में प्राप्त हुए हैं।

- देवड़ा व राजसूत शासकों का अधिकार १५वीं शताब्दी
में

- १५वीं शताब्दी में यह शादर छव्वत हो गया।

RBSE
⑥ प्रथमता - राजसमंडि

गिलूठ के पास एवं आटाड़ बनास संघटि
का एक मठल्वंपुर्वक्ष्यक्षल है।

✓ ताम्रपाणी कालीन

- नक्काशीयुक्त जार, सीप की चूड़ियां, टेराकोटा
के मनकु, राँख और जवाहरात

- दो मृदुपीता ब्रह्मो

बौद्धकालीन गुफाएँ

Buddhist Caves
(Buddhist Caves.)

कौलेली] Thalawad
विनायका	
हथिया गोड	

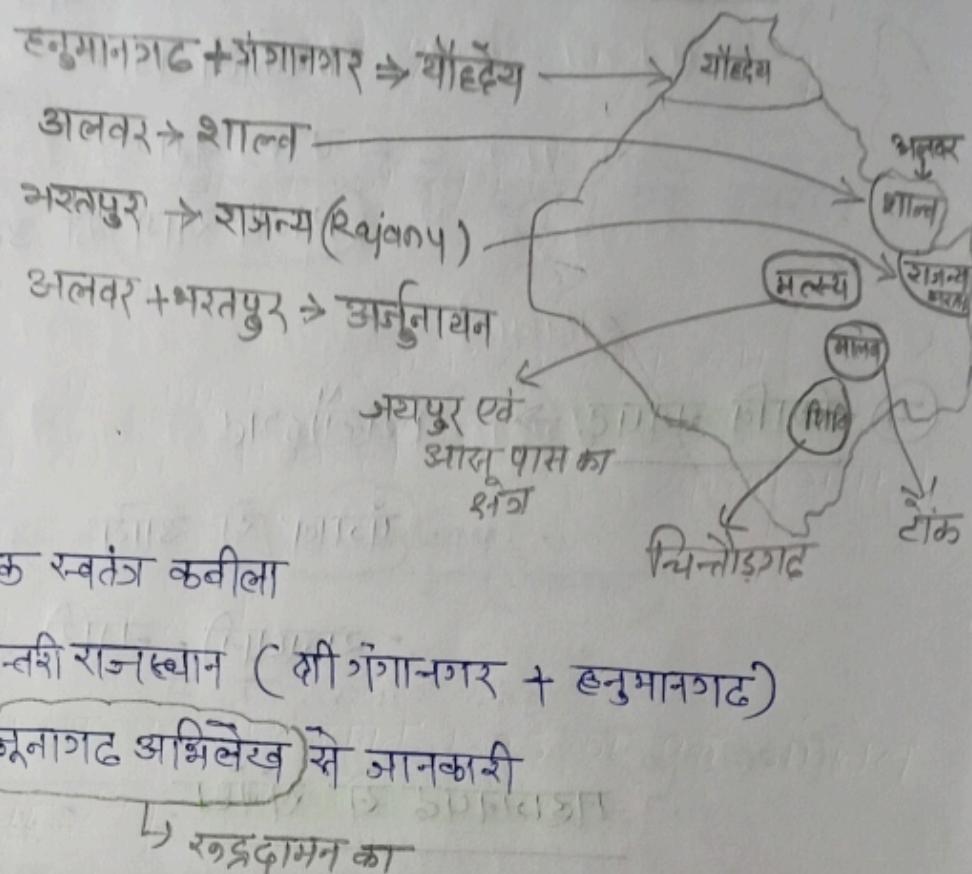
बैराठ. Jaipur

- Note:- (i) कांसादुगीन संशयताओं में → काले व लाल रंग के सृद्धांड
- (ii) जौहुगीन संशयताओं में → ललटी रंग के सृद्धांड
- (iii) गोले रंग के सृद्धांड के जोड़पुरा (जग्पुर)
- (iv) उनपह काल में सृद्धांड → उत्तरी काले पॉलिशदार
मृद्धांड (NBPW)
(या महानपद कालीन)

जनपद एवं महाजनपद काल और राजन्या-

अवधि-

सिंहर के आक्रमण के बाद
पंजाब की सालव, शिवि एवं
अजुनियन जातियाँ राष्ट्रभाषाएँ
आजी ।



② शिवि भनपट → चिन्तौडगढ़ के आस-पास का शेष

③ मल्य खनपट → ✓ शश्वेत मे उल्लेख

- विश्वासनगर (अयपुर) राजधानी
 - ✓ शतपथ व्रात्याण एवं कौषीतकी में जानकारी
 - महाभारत के समय यहाँ का राजा विश्वा था।
 - विश्व की पुत्री उत्तरा का विवाह अनुर्ध्व के पुत्र अभिमन्यु से हुआ।

④ राजन्य अनपद → अशतपृष्ठ

⑤. अर्जुनियन जनपद → अलवर + भरतपुर जा के

- ⑥ मालव जनपद →
- रैट एवं नगर शेत्र (टोंक) राजधानी - नडार
 - करकोटा नगर
 - दाटा नगर
 - राजा सोम का उल्लेख

- ⑦ शिवि जनपद → चित्तौड़गढ़

- पंजाब से आये
- राजधानी - नडारी

महाजनपद ये संबंध

- (i) सूरसैन महाजनपद → राजधानी सथुरा

- धौलिपुर एवं करौली

- (ii) कुक महाजनपद → राजधानी इंद्रप्रस्थ

- अलकर एवं भरतपुर

- (iii) अवन्ति महाजनपद → राजधानी उच्चेन

राजव्यान का कुछ शेत्र कोटा, बांरा व
झालमाड से रुहा पा

आय एवं राजस्वान (Arya And Rajasthan)

- महाभारत के समय
- जॉगल (बीकानेर) एवं गढ़कारांतर से कृष्ण एवं बलराम गुजरे थे।
- सरस्वती नदी की तुलना धार्घर नदी से की गई।
- अनूपगढ़, तरखान वाला डेरा व चक-64 (गोगानगर)

मौर्य एवं राजस्वान → (Maurya And Rajasthan)

- भाष्ट्र शिलालेख - बैराठ जयपुर
- चिर्णिङ्गट दुर्ग - राजा चिर्णिंश (मौर्य शासक)
- कनसावा मंदिर (कोटा) → मौर्य राजा धृतिल (795 AD)
- मानसेरी अभिलेख - मानसरोवर झील (मौर्य राजा मान)

- नामकरण →
- (i) जॉगल प्रदेरा - बीकानेर एवं जोधपुर का आग
 - (ii) सपादलश्च - अजमेर का नामेर का मध्य आग
 - (iii) कुकु - अलवर का उत्तरी आग
 - (iv) शरसने - अरतपुर व छोलपुर
 - (v) शिवी - उदयपुर का आग जिसकी राजधानी माध्यमिका (नगरी)
 - ↳ मेर जाति के जारा इसे मैगवाट या प्रावाट भी कहे
 - (vi) वागड - झंगरपुर एवं वांछवाडा
 - (vii) महापा सारकाड - जोधपुर
 - (viii) मालव - झालावाड
 - (ix) शुक्र गुजरिंगा - जोधपुर के द्वितीय आग
 - (x) अष्टुडी - झिराव

कौठल — प्रतापगढ़ माही नदी का भोव

छप्पन का मैदान — वाँसवाड़ा एवं प्रतापगढ़ के मध्य का आग

अपरमाल — अंसरोड़गाट से विज़ोलिया तक

मांड — जैसलमेर

शेखोवाटी — सीकर झुन्झुनु एवं घुक्क

गिरवा — उद्ध्यपुर का पहाड़ी आग